

**Premchand**  
**Do Bail Ki Katha**  
**Chapter 1**  
**DV**

जानवरों में गधा सबसे बुद्धिहीन समझा जाता है। हम जब किसी आदमी को पहले दरजे का बेवकूफ कहना चाहते हैं तो उसे गधा कहते हैं। गधा सचमुच बेवकूफ है, या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है, इसका निश्चय नहीं किया जा सकता। गायें सींग मारती हैं, ब्यायी हुई गाय तो अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है। कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर है, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है ; लेकिन गधे को कभी क्रोध करते नहीं

सुना, न देखा। जितना चाहों उस गरीब को मारो, चाहे जैसी खराब सड़ी हुई घास सामने डाल दो, उसके चेहरे पर कभी असंतोष की छाया भी न दिखायी देगी। वैशाख में चाहे क आध बार कुलेल कर लेता हो ; पर हमने तो उसे कभी खुश होते नहीं देखा। उसके चेहरे पर क स्थायी विषाद स्थायी रूप से छाया रहता है। सुख-दुख, हानि-लाभ, किसी दशा में भी बदलते नहीं देखा।

षियों-मुनियों के जितने गुण हैं, वह सभी उसमें पराकाष्ठा को पहुँच गये हैं, पर आदमी उसे बेवकूफ कहता है। सद्गुणों का इतना अनादर कहीं नहीं देखा। कदाचित् सीधापन संसार के लि उपयुक्त नहीं है। देखि न, भारतवासियों की अफ्रीका में क्या दुर्दशा हो रही है ? क्यों अमेरिका में उन्हें घुसने नहीं दिया जाता बेचारे शराब नहीं पीते, चार पैसे कुसमय के लि बचा कर रखते हैं, जी तोड़कर काम करते हैं , किसी से लड़ाई-झगड़ा नहीं करते, चार बातें सुनकर गम खा जाते हैं। फिर भी बदमाश हैं। कहा जाता है, जीवन के आदर्श को नीचा करते हैं। अगर वे भी ईट का जवाब पत्थर से देना सीख जाते तो शायद सभ्य

कहलाने लगते। जापान की मिसाल सामने है। क ही विजय ने उसे संसार की सभ्य जातियों में गण्य बना दिया।

लेकिन गधे का क छोटा भाई और भी है जो उससे कुछ ही कम गधा है, और वह है 'बैल' । जिस अर्थ में हम गधा का प्रयोग करते हैं, कुछ उसी से मिलते-जुलते अर्थ में बछिया के तारु का प्रयोग भी करते हैं। कुछ लोग बैल को शायद बेवकूफों में सर्वश्रेष्ठ कहेंगे, मगर हमारा विचार ऐसा नहीं

। बैल कभी-कभी मारता भी है । कभी -कभी अड़ियल बैल भी देखने में आ जाता है। और भी कई रीतियों से वह अपना असंतोष प्रकट कर देता है ; अतव उसका स्थान गधे से नीचा है।

झूरी काछी के दोनो बैलों के नाम हैं हीरा और मोती। दोनों पछाई जाति के थे। देखने में सुन्दर, काम में चौकस, डील में ऊँचे। बहुत दिनों साथ रहते-रहते दोनों में भाई-चारा हो गया था । दोनों आमने-सामने या आस-पास बैठे हु क-दूसरे से मूक भाषा में विचार विनिमय करते थे। क दूसरे के मन की बात कैसे समझ जाता था, हम नहीं कह सकते। अवश्य ही उनमें कोई-सी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है। दोनों क दूसरे को चाट और सूँघकर अपना प्रेम प्रकट करते । कभी-कभी दोनों सींग भी मिला लिया करते थे, विग्रह के भाव से नहीं, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से ;जैसे दोस्तों में घनिष्टता होते ही धौल-धप्पा

होने लगता है। इसके बिना दोस्ती कुछ फुसफुसी, कुछ हल्की सी रहती है, जिस पर ज्यादा विश्वास नहीं किया जा सकता। जिस वक्त यह दोनों बैल हल या गाड़ी में जोत दि जाते थे और गरदन हिला-हिला कर चलते, तो हर क की यही चेष्टा होती थी कि ज्यादा बोझ मेरी गरदन पर रहे। दिन भर के बाद दोपहर या संध्या को दोनों खुलते, तो क दूसरे

को चाट-चूट कर अपनी थकान मिटा

लिया करते। नाँद में खली-भूसा पड़ जाने के बाद दोनों साथ उठते, साथ नाँद में मुँह डालते और साथ ही बैठते थे। क मुँह हटा लेता तो दूसरा भी हटा लेता था।

संयोग की बात, झूरी ने क बार गोई को ससुराल भेज दिया। बैलों को क्या मालूम, वे क्यों भेंजे जा रहे हैं। समझे मालिक ने हमें बेंच दिया।

अपना यों बेचा जाना उन्हें अच्छा लगा या बुरा, कौन जाने ; पर झूरी के साले गया को घर तक गोई ले जाने में दाँतों पसीना आ गया। पीछे से हाँकता तो दोनों दाँ-बाँ भागते, पगहिया पकड़ कर आगे से खींचता तो दोनों पीछे को जोर लगाते। मारता तो दोनों सींग नीचे करके हूँकारते। अगर ईश्वर ने इन्हें वाणी दी होती, तो झूरी से पूछते -तुम हम गरीबों को क्यों निकाल रहे हो ? हमने तो तुम्हारी सेवा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। अगर इतनी मेहनत से काम न चलता था तो और काम लेते। हमें तो तुम्हारी चाकरी में मर जाना कबूल था । हमनें दाने-चारे की शिकायत नहीं की।

तुमनें जो कुछ खिलाया ,वह सिर झुका कर खा लिया-फिर तुमने हमें इस जालिम के हाथ क्यों बेच दिया ?

संध्या समय दोनों बैल अपने नये स्थान पर पहुँचे। दिन भर के भूखे थे;लेकिन जब नाँद में लगाये ग तो क ने भी उसमें मुँह न डाला। दिल भारी हो रहा था। जिसे उन्होंने अपना घर समझ रखा था। वह आज उनसे छूट गया था। यह नया घर, नया गाँव, नये आदमी सब उन्हें बेगाने से लगे।

दोनों ने अपनी मूक भाषा में सलाह की, क-दूसरे को कनखियों से देखा और लेट गये। जब गाँव में सोता पड़ गया, तो दोनों ने जोर मार कर पगहे तुड़ा डाले और घर की तरफ चले। पगहे बहुत मजबूत थे। अनुमान नहीं हो सकता था कि कोई बैल उन्हें तोड़ सकेगा पर इन दोनों में इस समय दूसरी शक्ति आ गयी थी। क-क झटके में रस्सियाँ टूट गयीं।

झूरी प्रातःकाल सोकर उठा, तो देखा कि दोनों बैल चरनी पर खड़े हैं। दोनों की गरदनो में आधा-आधा गराँव लटक रहा है। घुटने तक पाँव कीचड़ से भरे हैं, और दोनों की आँखों

में विद्रोहमय स्नेह झलक रहा है।

झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गदगद् हो गया। दौड़कर उन्हें गले लगा लिया।  
प्रेमालिंगन और चुम्बन का वह दृश्य बड़ा ही मनोहर था ।

घर और गाँव के लड़के जमा हो गये और तालियाँ बजा-बजाकर कर उनका स्वागत करने लगे। गाँव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर भी महत्वपूर्ण थी । बाल सभा ने निश्चय किया कि, दोनों पशुवीरों को अभिनन्दन-पत्र देना चाहि। कोई अपने घर से रोटियाँ लाया,कोई गुड़,

कोई,चोकर ,कोई भूसी।

क बालक ने कहा-‘से बैल किसी के पास न होंगे।  
दूसरे ने समर्थन किया- इतनी दूर से अकेले चले आये।  
तीसरा—बैल नहीं हैं वे, उस जन्म के आदमी हैं।  
इसका प्रतिवाद करने का किसी को साहस न हुआ।  
झूरी की पत्नी ने बैलों को द्वार पर देखा, तो जल उठी। बोली—कैसे नमक हराम बैल हैं कि क दिन भी वहाँ काम न किया। भाग खड़े हु।  
झूरी अपने बैलों पर आक्षेप न सुन सका- नमकहराम क्यों है ? चारा-दाना दिया न होगा, तो क्या करते ?

स्त्री ने रोब के साथ कहा-बस, तुम्हीं तो बैलों को खिलाना जानते हो, और सभी पानी पिला-पिला कर रखते हैं।

झूरी ने चिढ़ाया-चारा मिलता तो क्यों भागते ?

स्त्री चिढ़ी- भागे इसलि कि वे लोग तुम जैसे बुद्धुओं की तरह बैलों को सहलाते नहीं ।  
खिलाते हैं तो रगड़ कर जोतते भी हैं। यह दोनों ठहरे कामचोर, भाग निकले। अब देखूँ

कहाँ से खली और चोकर मिलता है ? सूखे-भूसे के सिवा कुछ न दूँगी, खायेँ चाहें मरे।

वहीं हुआ । मजूर को कड़ी ताकीद तक दी गयी कि बैलों को खाली सूखा भूसा दिया जाय।

बैलों ने नाँद में मुँह डाला तो फीका-फीका । न कोई चिकनाहट न कोई रस। क्या खायेँ। आशा भरी आँखों से द्वार की ओर ताकने लगे। झूरी ने मजदूर से कहा- थोड़ी-सी खली क्यों नहीं डाल देता बे?

‘मालकिन मुझे मार ही डालेंगी।’

‘चुरा कर डाल आ।’

‘न दादा, पीछे से तुम भी उन्हीं की सी कहोगे।’

दूसरे दिन झूरी का साला फिर आया और बैलों को ले चला। अबकी उसने दोनों को गाड़ी में जोता।

दो-चार बार मोती ने गाड़ी को सड़क की खाई में गिराना चाहा, पर हीरा ने संभाल लिया ।

वह ज्यादा सहनशील था ।

सन्ध्या समय घर पहुँचकर उसने दोनों को मोटी रस्सियों से बाँधा और कल की शरारत का मजा चखाया। फिर वही सूखा भूसा डाल दिया। अपने दोनों बैलों को खली, चूनी, सब कुछ दी।

दोनों बैलों को ऐसा अपमान कभी न हुआ था । झूरी इन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था । उसकी टिटकार

पर दोनों उड़ने लगते थे। यहाँ पर मार पड़ी। आहत सम्मान की व्यथा तो थी ही, उस पर मिला सूखा भूसा। नाँद की तरफ आँख तक न उठायी।

दूसरे दिन गया ने बैलों को हल में जोता ; पर इन दोनों ने जैसे पाँव उठाने की कसम खा ली थी। वह मारते-मारते थक गया ; पर दोनों ने पाँव न उठाया। क बार जब निर्दयी ने हीरा के नाक में खूब डंडे जमाये तो मोती का गुस्सा काबू से बाहर हो गया। हल लेकर भागा। हल, रस्सी, जुआ, सब टूट-टाट कर बराबर हो गया। गले में बड़ी-बड़ी रस्सियाँ न

होतीं तो दोनों पकड़ायी में न आते।

हीरा ने मूक भाषा में कहा- भागना व्यर्थ है।

मोती ने उसी भाषा में उत्तर दिया-तुम्हारी तो इसने जान ही ले ली थी। अबकी बड़ी मार पड़ेगी।

‘पड़ने दो, बैल का जन्म लिया है, तो मार से कहाँ तक बचेंगे।’

‘गया दो आदमियों के साथ दौड़ा आ रहा है। दोनों के हाथ में लाठियाँ हैं। मोती बोला-  
कहो

तो दिखा दूँ कुछ मजा मैं भी। लाठी लेकर आ रहा है।

हीरा ने समझाया--नहीं भाई , खड़े हो जाओ।

‘मुझे मारेगा, तो मैं क-दो को गिरा दूँगा।’

‘नहीं, हमारी जाति का यह धर्म नहीं।’

मोती दिल में ठ कर रह गया। गया आ पहुँचा और दोनों को पकड़ कर ले चला। कुशल हुई कि उसने इस वक्त मार पीट न की, नहीं मोती भी पलट पड़ता उसके तेवर देख कर रह गया और उसके सहायक समझ गये कि इस वक्त टाल जाना मसलहत है।

आज दोनों के सामने फिर वही सूखा भूसा लाया गया। दोनों चुपचाप खड़े रहे। घर के लोग भोजन करने लगे। उसी वक्त क छोटी सी लड़की दो रोटियाँ लि निकली, और दोनों को मुँह में देकर चली गयी। उस क रोटी से इनकी भूख तो क्या शांत होती ; पर दोनों के हृदय को मानों भोजन मिल गया। यहाँ भी किसी सज्जन का वास है। लड़की भैरों की थी। उसकी माँ मर चुकी थी। सौतेली माँ उसे मारती रहती थी ; इसलि इन बैलों से उसे क प्रकार की आत्मीयता ही गयी थी।

दोनों दिन भर जोते जाते, डंडे खाते। शाम को थान पर बाँध दिये जाते और रात को वही

बालिका उन्हें दो रोटियाँ खिला जाती । प्रेम के इस प्रसाद की यह बरकत थी कि दो-दो गाल सूखा भूसा खाकर भी वह दुर्बल न होते थे, मगर दोनों के आँखों में ,रोम-रोम में विद्रोह भरा हुआ था।

क दिन मोती ने मूक भाषा में कहा- अब तो सहा नहीं जाता हीरा ?

‘क्या करना चाहते हो ?’

‘एकाध को सींगो पर उठा कर फेंक दूँगा।’

‘लेकिन जानते हो वह प्यारी, लड़की, जो हमें रोटियाँ खिलाती हैं, उसी की लड़की है, जो इस घर का मालिक है। वह बेचारी अनाथ हो जागी।

‘तो मालकिन को न फेंक दूँ। वही तो उसे लड़की को मारती हैं।’

‘लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूल जाते हो।’

‘तुम तो किसी तरह निकलने ही नहीं देते। तो आओ, आज तुड़ाकर भाग चलें।’

‘हाँ’ यह मैं स्वीकार करता हूँ ;लेकिन इतनी मोटी रस्सी टूटेगी कैसे ?’

‘इसका उपाय है।’ पहले रस्सी का थोड़ा सा चबा लो। फिर क-क झटके में टूट जाती है’

रात को जब बालिका रोटियाँ खिला कर चली गयी, तो दोनों रस्सियाँ चबाने लगे, मोटी रस्सी मुँह में न आती थी । बेचारे बार-बार जोर लगाकर रह जाते।

सहसा घर का द्वार खुला, और वही लड़की निकली। दोनों सिर झुका कर उसका हाथ चाटने लगे। दोनों की पूँछ खड़ी हो गयीं। उसने उनके माथे सहलाये और बोली-खोले देती हूँ। चुपके से भाग जाओ, नहीं यहाँ लोग मार डालेंगे। आज घर में सलाह हो रही है की इनकी नाकों में नाथ डाल दी जाय ।

उसने गर्राँव खोल दिया, पर दोनों चुपचाप खड़े रहे।

मोती ने अपनी भाषा में पूछा-- अब चलते क्यों नहीं ?

हीरा ने कहा--चलें तो लेकिन कल इस अनाथ पर आफत आगी। सब इसी पर सन्देह करेंगे। सहसा बालिका चिल्लाई दोनों फूफा वाले बैल भागे जा रहे हैं। ओ दादा ! दोनों बैल भागे जा रहे हैं। जल्दी दौड़ो।

गया हड़बड़ा कर भीतर से निकला और बैलों को पकड़ने चला। वह दोनों भागे। गया ने पीछा किया। वह और भी तेज हुआ। गया ने शोर मचाया फिर गाँव के कुछ आदमियों को साथ लेने के लिए लौटा। दोनों मित्र को भागने का मौका मिल गया। सीधे दौड़ते चले गए। यहाँ तक कि मार्ग का ज्ञान न रहा। जिस परिचित मार्ग से आये थे, उसका यहाँ पता न था। नये-नये गाँव मिलने लगे। तब दोनों के खेत के किनारे खड़े होकर सोचने लगे, अब क्या करना चाहिए।

हीरा ने कहा-मालूम होता है राह भूल गये।

‘तुम भी तो बेतहाशा भागे। वहीं उसे मार गिराना था।’

‘उसे मार गिराते, तो दुनिया क्या कहती ? वह अपना धर्म छोड़ दे ; लेकिन हम अपना धर्म क्यों छोड़ें !’

दोनों भूख से व्याकुल हो रहे थे। खेत में मटर खड़ी थी। चरने लगे। रह-रह कर आहट ले लेते थे, कोई आता तो नहीं।

जब पेट भर गया दोनों ने आजादी का अनुभव किया, तो मस्त होकर उछलने कूदने लगे। पहले दोनों ने डकार ली। फिर सींग मिला, और क-दूसरे को ठेलने लगे। मोती ने हीरा को कई कदम पीछे हटा दिया, यहाँ तक वह खाई में गिर गया। तब उसे भी क्रोध आया। सँभल कर उठा और फिर मोती से भिड़ गया। मोती में देखा- खेल में झगड़ा हुआ चाहता है, तो किनारे हट गया।

अरे ! वह क्या ! कोई साँड़ डौंकता चला आ रहा है। हाँ, साँड़ ही है। सामने आ पहुँचा।

दोनों मित्र बगलें झाँक रहे हैं। साँड़ पूरा हाथी है। उससे भिड़ना जान से हाथ धोना है ; लेकिन न भिड़ने पर भी तो जान बचती नहीं नजर आती। इन्हीं की तरफ आ रहा है।



कितनी भयंकर सूरत है !

मोती ने मूक भाषा में कहा- बुरे फँसे ! जान कैसे बचेगी ? कोई उपाय सोचो।

हीरा ने चिन्तित स्वर में कहा- अपने घमंड में भूला हुआ है। आरजू विनती न सुनेगा।

‘भाग क्यों न चलें।’

‘भागना कायरता है।’

‘तो फिर यहीं मरो। बन्दा तो नौ-दो ग्याहर होता है।’

‘और जो दौड़ाये ?’

‘ तो फिर कोई उपाय सोचो जल्द !’

‘उपाय यही है कि उस पर दोनों जने क साथ चोट करें। मैं आगे से रगेदता हूँ, तुम पीछे से रगेदो, दोहरी मार पड़ेगी, तो भाग खड़ा होगा। ज्यों ही मेरी ओर झपटे तुम बगल से उसके पेट में

सींग घुसेड़ देना। जान जोखिम में है, पर दूसरा उपाय नहीं है।’

दोनों मित्र जान हथेलियों पर लेकर लपके। साँड़ को कभी संगठित शत्रुओं से लड़ने का तजरबा न था। वह तो क शत्रु से मल्लयुद्ध करने का आदी था। ज्यों ही हीरा झपटा, मोती ने पीछे से दौड़ाया । साँड़ उसकी तरफ मुड़ा तो हीरा ने रगेदा। साँड़ चाहता था क-क करके दोनों को गिरा ले ; पर यह दोनों उस्ताद थे। उसे यह अवसर न देते थे। क बार साँड़ झल्लाकर हीरा का अंत कर देने के लि चला कि मोती ने बगल से आकर उसके पेट में सींग भोंक दिया। साँड़ क्रोध में

आकर पीछे फिरा तो हीरा ने दूसरे पहलू में सींग चुभा दिया। आखिर बेचारा जख्मी होकर भागा और दोनों ने दूर तक उसका पीछा किया। यहाँ तक कि साँड़ बेदम होकर गिर पड़ा। तब दोनों ने उसे छोड़ दिया।

दोनों मित्र विजय के नशे में झूमते चले जा रहे थे।

मोती ने अपनी सांकेतिक भाषा में कहा- मेरा जी चाहता था कि बच्चा को मार ही डालूँ।

हीरा ने तिरस्कार किया- गिरे हु बैरी पर सींग नहीं चलाना चाहि।

‘.यह सब ढोंग है। बैरी को`सा मारना चाहि कि फिर न उठे ।

‘ अब कैसे घर पहुँचेंगे, यह सोचो । ’

‘ पहले कुछ खा लें, तब सोचें।’

सामने मटर का खेत था ही। मोती उसमें घुस गया। हीरा मना करता रहा, पर उसने क न सुनी। अभी दो ही चार ग्रास खाये थे कि दो आदमी लाठियाँ लिये दौड़ पड़े और दोनों मित्रों को घेर लिया। हीरा मेंड़ पर था निकल गया मोती सींचे हु खेत में था। उसके खुर कीचड़ मे धँसने लगे। भाग न सका। पकड़ लिया गया। हीरा ने देखा, संगी सकंट में हैं, लौट पड़ा। फँसेंगे तो दोनों फँसेंगे।

रखवालों ने उसे भी पकड़ लिया गया ।

प्रातःकाल दोनों मित्र काँजीहाउस में बंद कर दिये गये।

दोनों मित्रों को जीवन में पहली बार ऐसा सबका पड़ा था कि सारा दिन बात गया और खाने को क तिनका भी न मिला। समझ में ही न आता था। यह कैसा स्वामी है। इससे तो गया फिर भी अच्छा था । वहाँ कई भैंसे थीं, कई बकरियाँ, घोड़े, कई गधे, पर किसी के सामने चारा न था, सब जमीन पर मुरदों की तरह पड़े थे। कई तो इतने कमजोर हो गये थे कि खड़े भी न हो सकते थे। सारा दिन दोनों मित्र फाटक की ओर टकटकी लगाये ताकते रहे ; पर कोई चारा लेकर आता न दिखाई दिया। तब दोनों न दीवार की नमकीन मिट्टी चाटनी शुरू की ; पर इससे क्या तृप्ति होती ?

रात को भी कुछ भोजन न मिला, तो हीरा के दिल में विद्रोह की ज्वाला दहक उठी। मोती से बोला - अब तो नहीं रहा जाता मोती !

मोती ने सिर लटकाये हु जवाब दिया-मुझे तो मालूम होता है प्राण निकल रहे हैं।

‘इतनी जल्द हिम्मत न हारो भाई ! यहाँ से भागने का कोई उपाय निकालना चाहि।’

‘आओ दीवार तोड़ डालें ?’

‘मुझ से तो अब कुछ ने होगा।’

‘बस इसी बूते पर अकड़ते थे।’

‘सारी अकड़ निकल गयी।’

बाड़े की दीवार कच्ची थी । हीरा मजबूत तो था ही, अपने नुकीले सींग दीवार में गड़ा दिये और जोर मारा, तो मिट्टी का क चप्पड़ निकल आया। फिर तो उसका साहस बढ़ा। उसने दौड़-दौड़ कर दीवार पर चोटें की और हर चोट में थोड़ी-थोड़ी मिट्टी गिराने लगा।

उसी समय काँजीहाउस का चौकीदार लालटेन लेकर जानवरों की हाजिरी लेने आ निकला। हीरा का यह उजड़पन देख कर उसने कई डंडे रसीद किये और मोटी-सी रस्सी से बाँध दिया।

मोती ने पड़े-पड़े कहा- आखिर मार खायी, क्या मिला ?

‘अपने बूते भर जोर तो मार लिया।’

‘ऐसा जोर मारना किस काम का कि और बंधन में पड़ गये।’

‘जोर तो मारता ही जाऊँगा,चाहें कितने बंधन पड़ते जायँ।’

‘जान से हाथ धोना पड़ेगा।’

‘कुछ परवाह नहीं। यों भी तो मरना ही है। सोचो दीवार खुद जाती,तो कितनी जानें बच जातीं। इतने भाई यहाँ बन्द हैं। किसी की देह में जान नहीं है। दो चार दिन और यही हाल रहा तो सब मर जायेंगे।’

‘हाँ’ यह बात तो है। अच्छा तो लो, फिर मैं भी जोर लगाता हूँ।’

मोती ने दीवार में उसी जगह सींग मारा। थोड़ी सी मिट्टी गिरी और हिम्मत बढ़ी। फिर तो दीवार में सींग लगा कर इस तरह जोर करने लगा मानो किसी द्वन्द्वी से लड़ रहा है। आखिर कोई दो घंटे की जोर आजमाईश के बाद दीवार ऊपर से लगभग क हाथ गिर गयी। उसने दूनी शक्ति से धक्का मारा, तो आधी दीवार गिर पड़ी।

दीवार का गिरना था कि अधमरे पड़े हु सभी जानवर चेत उठे। तीनों घोड़ियाँ सरपट भाग निकलीं। फिर बकरियाँ निकलीं। इसके बाद भैंसे भी खिसक गयीं ; पर गधें अभी तक ज्यों के त्यों खड़े थे।

हीरा ने पूछा- तुम क्यों नहीं भाग जाते ?

एक गधा ने कहा-जो कहीं फिर पकड़ लि जायँ ?

‘तो क्या हरज है। अभी तो भागने का अवसर है।’

‘हमें तो डर लगता है। हम यहीं पड़े रहेंगे।’

आधी रात से ऊपर जा चुकी थी । दोनों गधे अभी तक खड़े सोच रहे थे, भागें या न भागें। और मोती अपने मित्र की रस्सी तोड़ने में लगा हुआ था, जब वह हार गया तो हीरा ने कहा-तुम जाओ, मुझे यहीं पड़ा रहने दो। शायद कहीं भेंट हो जाय।

मोती ने आँखों में आँसू लाकर कहा--तुम मुझे इतना स्वार्थी समझते हो हीरा ! हम और तुम इतने दिनों क साथ रहे। आज तुम विपत्ति में पड़ गये, तो मैं तुम्हें छोड़ कर अलग हो जाऊँ ?

हीरा ने कहा-बहुत मार पड़ेगी। लोग समझ जायेंगे, यह तुम्हारी शरारत है।

मोती गर्व से बोला- जिस अपराध के लि तुम्हारे गले में बन्धन पड़ा, उसके लि अगर मुझ पर मार पड़े,तो क्या चिंता। इतना तो हो ही गया कि नौ दस प्राणियों की जान बच गयी। यह सब तो आशीर्वाद देंगे।

यह कहते हु मोती ने दोनों गधों को सींगों से मार-मारकर बाड़े के बाहर निकाला और तब अपने बंधु के पास आकर सो रहा।

भोर होते ही मुंशी और चौकीदार और अन्य कर्मचारियों में कैसी खलबली मची इसके लिखने

की जरूरत नहीं। बस, इतना ही काफी है कि मोती की खूब मरम्मत हुई और उसे भी मोटी रस्सी से बाँध दिया गया।

क सप्ताह तक दोनों मित्र वहाँ बँधे पड़े रहे। किसी ने चारे का क तृण भी न डाला। हाँ,

क बार पानी दिखा दिया जाता था। यही उनका आधार था । दोनों इतने दुर्बल हो ग थे कि उठा तक न जाता था। ठठरियाँ निकल आयी थीं।

क दिन बाड़े के सामने डुग्गी बजने लगी और दोपहर होते-होते वहाँ पचास-साठ आदमी जमा हो गये। तब दोनों मित्र निकाले गये और उनकी देखभाल होने लगी। लोग आ-आकर उनकी

सूरत देखते और मन फीका करके चले जाते से मृतक बैलों का कौन खरीददार होता ?

सहसा क दड़ियल आदमी जिसकी आँखें लाल थीं, और मुद्रा अत्यन्त कठोर, आया और दोनों मित्रों के कूल्हे में उँगली गोद कर मुँशी जी से बातें करने लगा। उन्हें क्यों टटोल रहा है, इस विषय में उन्हें कोई सन्देह न हुआ । दोनों ने क दूसरे को भीत नेत्रों से देखा और सिर झुका लिया ।

हीरा ने कहा- गया के घर से नाहक भागे। अब जान न बचेगी।

मोती ने अश्रद्धा भाव से उत्तर दिया- कहते हैं, भगवान् सबके ऊपर दया करते हैं। इन्हें हमारे ऊपर क्यों दया नहीं आती ?

भगवान के लि हमारा मरना-जीना दोनों बराबर है। चलो, अच्छा ही है, कुछ दिन उसके पास तो रहेंगे। क बार भगवान ने उस लड़की के रूप में बचाया था । क्या अब न बचायेंगे ?

‘यह आदमी छुरी चलायेगा। देख लेना।’

‘तो क्या चिन्ता है। मांस, खाल, सींग, हड्डी सब किसी न किसी काम आ जायेंगी।’

नीलाम हो जाने के बाद दोनों मित्र उस दड़ियल के साथ चले। दोनों की बोटी-बोटी काँप रही थी। बेचारे पाँव तक न उठा सकते थे ; पर भय मारे गिरते-पड़ते भागे जाते थे ; क्यों कि वह जरा भी चाल धीमी हो जाने पर जोर का डंडा जमा देता था।

राह में गाय-बैल का रेबड़ हरे-हरे हार में चरता नजर आया। सभी जानवर प्रसन्न थे, चिकने, चपल। कोई उछलता था, कोई आनन्द से बैठा पागुर करता था। कितना सुखी जीवन था इनका, पर कितने स्वार्थी हैं सब। किसी को चिन्ता नहीं कि उनके दो भाई वधिक के हाथ पड़े कैसे दुखी हैं।

सहसा दोनों को`सा मालूम हुआ, यह परिचित राह है। हाँ, इसी रास्ते से गया उन्हें ले गया था। वही खेत, वही बाग, वही गाँव मिलने लगे। प्रति क्षण उनकी चाल तेज होने लगी। सारी थकान सारी दुर्बलता गायब हो गयी। अहा यह लो ! अपना ही हार आ गया। इसी कुँ पर हम पुर चलाने आया करते थे। हाँ यही कुआँ है।

मोती ने कहा-हमारा घर नगीच आ गया।

हीरा बोला-भगवान की दया है।

‘मैं तो अब घर भागता हूँ ।’

‘यह जाने देगा ?’

‘इसे मार गिराता हूँ।’

‘नहीं-नहीं दौड़कर थान पर चलो। वहाँ से हम आगे न जायेंगे।’

दोनों उन्मत्त होकर बछड़ों की भाँति कुलेलें करते हु घर की ओर दौड़े। वह हमारा थान है। दोनों दौड़ कर अपने थान पर आये और खड़े हो गये। दड़ियल भी पीछे-पीछे दौड़ा चला आता था।

झूरी द्वार पर बैठा धूप खा रहा था। बैलों को देखते ही दौड़ा और उन्हें बारी-बारी से गले लगाने लगा। मित्रों को आँखों से आनन्द के आँसू बहने लगे। क झूरी का हाथ चाट रहा था।

दड़ियल ने जाकर बैलों की रस्सियाँ पकड़ लीं।

झूरी ने कहा--मेरे बैल हैं।

‘तुम्हारे बैल कैसे ? मैं मवेशीखाने से नीलाम लिये आता हूँ।’

‘मैं तो समझता हूँ, चुराये लिये आते हो। चुपके से चले जाओ। मेरे बैल हैं। मैं बेचूँगा, तो बिकेंगे। किसी को मेरे बैल नीलाम करने का क्या अख्तियार है ?

‘जाकर थाने में रपट कर दूँगा।’

‘मेरे बैल हैं। इसका सबूत यह है कि मेरे द्वार पर खड़े हैं।’

दढियल झल्लाकर बैलों को जबरदस्ती पकड़ ले जाने को बढ़ा। उसी वक्त मोती ने सींग चलाया। दढियल पीछे हटा। मोती ने पीछा किया । दढियल भागा । मोती पीछे दौड़ा। गाँव के बाहर निकल जाने पर वह रुका ; पर खड़ा दढियल का रास्ता देख रहा था । दढियल दूर खड़ा धमकियाँ दे रहा था, गालियाँ निकाल रहा था, पत्थर फेंक रहा था और मोती विजयी की भाँति उसका रास्ता रोके खड़ा था। गाँव के लोग तमाशा देखते थे और हँसते थे।

जब दढियल हार कर चला गया, तो मोती अकड़ता हुआ लौटा।

हीरा ने कहा- मैं डर रहा था कि कहीं तुम गुस्से में आकर मार न बैठो।

‘अगर वह मुझे पकड़ता, तो मैं बे मारे न छोड़ता।’

‘अब न आयेगा।’

‘आयेगा तो दूर ही से खबर लूँगा। देखूँ कैसे ले जाता है।’

‘जो गोली मरवा दे ?’

‘मर जाऊँगा ; उसके काम न आऊँगा।’

‘हमारी जान को कोई जान ही नहीं समझता।’

‘इसलि कि हम इतने सीधे होते हैं।’

जरा देर में नाँद में खली, भूसा, चोकर, दाना भर दिया गया और दोनों मित्र खाने लगे। झूरी खड़ा दोनों को सहला रहा था और बीसों लड़के तमाशा देख रहे थे। सारे गाँव में उछाह-सा मालूम होता था।

उसी समय मालकिन ने आकर दोनों के माथे चूम लि।

